International Journal of Advanced Academic Studies 2022; 4(1): 40-43

E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(1): 40-43
Received: 25-11-2021
Accepted: 27-12-2021

डॉ. वर्षा गौतम
अतिथि सहा. प्राध्यापक, विभाग शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. वर्षा गौतम
अतिथि सहा. प्राध्यापक, विभाग शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा विकासखण्ड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की माध्यमिक शालाओं में विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. वर्षा गौतम

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा विकासखण्ड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की माध्यमिक शालाओं में विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोधकार्य में समष्टि के रूप में रीवा विकासखण्ड के समस्त माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा विद्यार्थियों की कुल संख्या होगी। चूंकि समस्त समष्टि पर शोध कार्य करना असंभव नही, पर कठिन है इसलिए शोधार्थी ने समष्टि से उचित इकाईयों का चयन हेतु संभाव्य – आदर्श की यादृच्छिक विधि की लाटरी विधि का प्रयोग करके 125 शहरी एवं 125 ग्रामीण क्षेत्र से कुल 250 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.52 तथा मानक विचलन 8.52 है। ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 28. 92 तथा मानक विचलन 9.11 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 3.17 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.33 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

कुटशब्दः रीवा विकासखण्ड, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र, माध्यमिक विद्यालय, आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना
शिक्षा का उद्देश्य ही सर्वांगीण विकास का है जिसे शिक्षण संस्थायें सकारात्मक दिशा प्रदान करते हुये उर्जा प्रवाहमय को दिशा के उद्देश्य की तरफ ले चलते हैं जिसमें विद्यालयी परिवेश उसकी उर्जा स्तर को पोषण प्रदान करते हुये लक्ष्य की तरफ गतिशील करते हैं। विद्यार्थियों के विकासशीलता में समाज के योगदान को झुठलाया नहीं जा सकता क्योंकि सामाजिक परिवेश से ही वह प्रेरक दिशा प्रदान करता है जिससे भावी नागरिकता का प्रशिक्षण किशोरों को प्राप्त होता है और नवीनीकरण का प्रत्यय विचारों में, ज्ञानवृद्धि में, पहनावा, भोजन, चिकित्सा, यांत्रिकी इत्यादि में आता हैं, क्योंकि यह संसार मिथ्या होने के साथ–साथ परिवर्तनशील भी हैं। विद्यार्थी भी अपने में परिवर्तनशीलता के साथ–साथ परिपक्वता की तरफ बढ़ता है। जिसमें विश्वबंधुत्व का भाव वैश्वीकरण का रुप ले चुका है अर्थात् पूरा विश्व गॉवों जैसी सुविधाओं में सूचना और तकनीकी की सहायता से बदल चुका है। गॉवों की सुख सुविधायें जैसे व्यवस्थित थी, ठीक उसी प्रकार विश्व के सभी लोग एक–दूसरे की सुख व सुविधाओं से परिचित होने लगें है जिससें वे अपने को भी उसी तौर–तरीके में सभी क्षेत्रों के लिये तैयार करते हैं और इन प्रक्रियायों को ही आधुनिकीकरण कहा जाता है। आधुनिकीकरण तथा भौतिकता के इस युग में स्वाभाविक है कि विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति सोच और प्रत्याशा भी बदल रही है जिससे उनकी शैक्षिक आकॉक्षा में भी वृद्वि व परिवर्तन होना शुरु हुआ है।
शैक्षिक आकांक्षा में उपलब्धि की इच्छा निहित रहती है। शैक्षिक आकांक्षा यह नहीं बतलाती कि विद्यार्थी अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कितना सफल रहा; यह तो केवल इस बात का उल्लेख करती है कि विद्यार्थी क्या प्राप्त करना चाहता है या उसका लक्ष्य क्या है? शैक्षिक आकांक्षाओं को उच्च आदर्श भी कहा जा सकता है; अर्थात् जहाँ तक पहुँचने की हम लालसा रखते हैं, किन्तु जरूरी नहीं कि वे प्राप्त हों। प्रत्येक देश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक व्यवस्था के अनुरूप ही शिक्षा व्यवस्था की गई है। प्रत्येक नागरिक की शिक्षा के संबंध में कुछ आकांक्षाएँ होती हैं, जैसे– धर्म, जाति, वर्ण एवं स्थान के भेदभाव के बिना शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा, शिक्षा में अवसरों की समानता इत्यादि।
आकॉक्षा स्तर का सम्बंध जीवन लक्ष्य से है। किसी भी लक्ष्य या मूल्य आदि की प्राप्ति इच्छा आकॉक्षा कहलाती है तथा इन लक्ष्यों व मूल्यों को प्राप्त करने के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता या स्तर कहलाता है। आकॉक्षा स्तर से व्यक्ति के तात्कालिक लक्ष्य का संकेत मिलता है। जिसे एक व्यक्ति प्राप्त करने के लिये प्रयास करता है।

सोरेन्स के अनुसार ''आकांक्षा स्तर, व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए विशिष्ट लक्ष्यों का निर्धारण करना है। आकांक्षा स्तर क्षमता व योग्यता तथा पूर्ण सफलता व असफलता से भली भाँति प्रभावित होता है।''

शिक्षा के क्षेत्र में कुछ कर दिखाने या बनने की अभिलाषा जिस विद्यार्थी में विद्यमान रहती है, उसे शैक्षिक आकांक्षा कहते हैं, परन्तु यह इच्छा या लालसा शैक्षिक क्षेत्र में कितनी मात्रा में है, इससे उस विद्यार्थी की शैक्षिक आकांक्षा का पता चलता है। शैक्षिक आकांक्षा का अर्थ शैक्षिक क्षेत्र में विद्यार्थी की अपनी वर्तमान स्थिति से अपने आप को ऊँचा उठाने की इच्छा अथवा प्रयास से लगाया जाता है। सही अर्थों में शैक्षिक आकांक्षा वह है जो हम अपने शिक्षा के क्षेत्र में तथा भविष्य में किसी कार्य को इतना अच्छा करने का प्रयास करें कि वह हमारे द्वारा निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति का साधन बन जाये।

प्रत्येक व्यक्ति में आकॉक्षा स्तर भिन्न–भिन्न पाया जाता है। आकॉक्षा और आकॉक्षा स्तर व्यक्ति के जीवन निर्वाह को प्रभावित करता है। एक व्यक्ति क्या बनने की आकॉक्षा रखता है, वह इस दिशा में कितना प्रयास या सफलता प्राप्त करना चाहता है, यह सब उस व्यक्ति की आकॉक्षा पर निर्भर करता है, परन्तु यह बहुधा उन व्यक्तियों में होता है जो रिर्जव कम रहते हैं और आकॉक्षा स्तर उच्च श्रेणी का होता है, उच्च श्रेणी के आकॉक्षा स्तर के कारण जब योग्यताओं के अभाव में व्यक्ति इस स्तर के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है तो वह चिंतित, असंतुलित या कुसमायोजित हो जाता है, जो उसके कार्य व्यवहार में परिलक्षित होने लगता है। इसका पीरणाम यह होता है कि वह अपेक्षित कार्य निष्पादन नहीं कर पाता है और न ही वह अपने कार्य से सन्तुष्ट रह पाता है परिणामस्वरुप वह समाज को वह सब नहीं दे पाता जो देना चाहता है जिससे उसका मूल्य भी कम हो जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता

किसी कार्य में अपने अतीत निष्पादन स्तर को जानते हुए उस परिचित कार्य में भावी निष्पादन के जिस स्तर पर पहुँचने की व्यक्ति आशा करता है उसे आकांक्षा स्तर कहते हैं। शैक्षिक आकांक्षा स्तर भविष्य में किसी ऐसे काम को करने के रूप में परिभाषित करता है जिसे कोई व्यक्ति अपने भूतकालीन कार्य को नजर में रखते हुए पूरा करने की सोचता है। व्यक्ति का जीवन निर्माण उसके शैक्षिक आकांक्षा से बहुत प्रभावित रहता है। अर्थात् एक व्यक्ति क्या बनने की आकांक्षा रखता है, वह इस दिशा में कितना प्रयास या सफलता प्राप्त करना चाहता है यह सब उस व्यक्ति के आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है। अर्थात् व्यक्ति द्वारा निर्धारित लक्ष्य इससे बहुत प्रभावित होते हैं। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- रीवा विकासखण्ड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों की जानकारी प्राप्त करना।
- शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

साधारणतः परिकल्पना शब्द का अर्थ एक उपकथन से होता है, जो कि किसी समस्या की अवधारणा होती है तथा अनुसन्धानकर्ता उसकी पुष्टि करने का प्रयास करता है। परिकल्पना में कथन का स्वरूप एक व्याख्या के रूप में होता है, जो कि प्रायः सिद्धांत अथवा अवलोकन पर निर्धारित होता है। अनुसन्धान में जब किसी सिद्धांत की समकों तथा प्रमाण के आधार पर प्रमाणिकता की जाती है तब उसे परिकल्पना की संज्ञा दी जाती है। सम्पूर्ण अनुसन्धानिक क्रियाएँ निश्चय ही परिकल्पनाओं पर ही निर्भर होती हैं। परिकल्पना की प्रामाणिकता से ही निष्कर्ष सामने आते हैं। परिकल्पना को अंग्रेजी भाषा में ''भ्लचवजीमेपे'' कहा जाता है, जो कि दो शब्दों से मिलकर बना है।

शोध कार्य की परिकल्पना निम्नवत् है–

शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य में समय, व्यय, परिश्रम एवं साधनों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन का सीमांकन किया गया है जिससे निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके शोध क्षेत्र का सीमांकन निम्न प्रकार किया जा सकेगा।

1. शोधार्थी ने अपने कार्य में केवल भारत की मध्यप्रदेश राज्य के रीवा जिले के रीवा विकासखण्ड को समष्टि के रूप में चयन किया गया है।
2. शोधार्थी ने समष्टि में न्यादर्श के रूप में रीवा विकासखण्ड के माध्यमिक विद्यालयों का ही चुनाव किया गया है।
3. न्यादर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालयों में 250 विद्यार्थियों को (125 शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राएँ + 125 ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राएँ) चयन किया गया।

अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरण

शोधार्थी ने न्यादर्श में चयनित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व परीक्षाफल के आधार पर किया गया है।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण तथा शोध कार्य करने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से जैन, रश्मि (2007) [1], सिंह, नरेन्द्र कुमार (2017) [2], सिंह, राम बाबू (2012) [3], पाण्डेय, के.पी., (1985) [4], सिंह गुमान साहू (1997) [5], झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश

कुमार (2020) [6], गुप्ता एस.पी. (2001) [7], मेहता, सी. (1970) [8], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993) [9], सिडाना, अशोक कुमार एवं साहनी, सारिका (2019) [10], यादव, देवेन्द्र कुमार (2017) [11], कुमार, नागेन्द्र (2010) [12] एवं सिंह, प्रदीप कुमार एवं जय सिंह (2019) [13] ने शोध विधि एवं शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

रीवा विकासखण्ड का सामान्य परिचय

रीवा विकासखण्ड 24°18′ से 25° उत्तरी अक्षांश तथा 81°12′ से 82°8′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। रीवा विकासखण्ड के उत्तर में सिरमौर विकासखण्ड, पूर्व में रायपुर कर्चुलियान, दक्षिण में मध्यप्रदेश का सीधी जिला तथा पश्चिम में मध्यप्रदेश का सतना जिला स्थित है। किसी भी स्थान में लम्बे समय तक पायी जाने वाली गर्मी, सर्दी, वर्षा एवं हवा की औसत दशाओं को उस स्थान की जलवायु कहते है। रीवा विकासखण्ड की जलवायु विषम है। ग्रीष्म काल का औसत तापमान 40° से 45° से.ग्रे. तक एवं शीतकाल में तापमान 7° से 10° से.ग्रे. तक रहता है। जिले का अधिकतम तापमान मई माह में 45.2° से.ग्रे. तथा न्यूनतम तापमान 4° से.ग्रे. रहता है। औसत वर्षा 137 से.मी. से 144 से.मी. के बीच रहती है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है :

परिकल्पना क्र. 1: "शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।"

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का स्तर			
		शहरी		ग्रामीण	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम	8	6ण्40	15	12ण्00
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम	41	32ण्80	59	47ण्20
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम	49	39ण्20	35	28ण्00
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम	27	21ण्60	16	12ण्80

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में न्यादर्श हेतु चयनित शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 225 विद्यार्थियों में से 08 शहरी क्षेत्र एवं 15 ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 41 शहरी एवं 59 ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 49 शहरी एवं 35 ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 27 शहरी एवं 16 ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

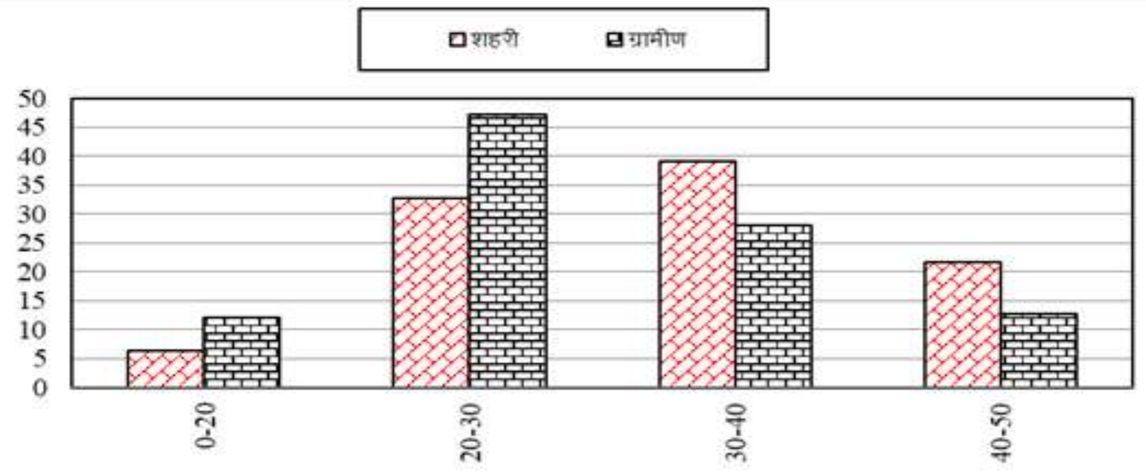

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 6.40 प्रतिशत शहरी क्षेत्र एवं 12.00 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 32.80 प्रतिशत शहरी एवं 47.20

प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 39.20 प्रतिशत शहरी एवं 28.00 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 21.60 प्रतिशत शहरी एवं 12.80 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

सारणी क्र. 2: शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह		शहरी	ग्रामीण
समूह की संख्या (छ)		125	125
मध्यमान (ड)		32.52	28.92
मानक विचलन (ँक)		8.82	9.11
क्रान्तिक निष्पत्ति (ब्त्ष्द्ध		3.17	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.52 तथा मानक विचलन 8.52 है। ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 28.92 तथा मानक विचलन 9.11 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ण् ज्मेज) किया गया, जिसमें ब् का मान 3.17 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.33 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। अतः परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 0.40 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 32.40 प्रतिशत शहरी एवं 44. 00 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 44.40 प्रतिशत शहरी एवं 40.40 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 17.60 प्रतिशत शहरी एवं 12.80 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।
2. शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 24.64 तथा मानक विचलन 8.50 है। ग्रामीण क्षेत्र में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 22.28 तथा मानक विचलन 7.78 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 3.24 प्राप्त हुआ।
3. शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. जैन रश्मि – कला समूह तथा विज्ञान समूह के ग्रामीण विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर तथा नैतिक मूल्यों का अध्ययन, प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली, वर्ष 50, अंक 9–10, अप्रैल–मई 2007.
2. सिंह, नरेन्द्र कुमार – किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि, International Journal of Hindi Research. 2017 May;3(3):55-59.
3. सिंह, राम बाबू – स्नातक स्तर पर कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की जीविका वरीयता, समायोजन तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षाशास्त्र, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, एम.जे.पी. विश्वविद्यालय, बरेली, 2012.
4. पाण्डेय, के.पी. – मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
5. सिंह गुमान साहू "उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" पं.रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर, 1997.
6. झा, नन्द कुमार एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार – सतना जिले में शासकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies. 2020;2(3):369-372.
7. गुप्ता एस.पी. – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
8. मेहता, सी. – नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
9. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. – भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
10. सिडाना, अशोक कुमार एवं साहनी, सारिका – जयपुर और टोंक जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन, Suraj Punj Journal For Multidisciplinary Research. 2019;9(5):568-577.
11. यादव, देवेन्द्र कुमार – अभिभावकीय आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies. 2017, 7781-7791.
12. कुमार, नागेन्द्र, – सामान्य जाति तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की आकॉक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शोध पत्र, विद्यामेघ, टी.पी. नगर मेरठ, 2010.
13. सिंह, प्रदीप कुमार एवं जय सिंह, "रीवा जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन" International Journal of Advanced Research and Development. 2019 Mar;4(2):47-49.